25

बिहारी, पहाड़ी तथा इनकी बोलियों का भौगोलिक विस्तार तथा विशेषताएँ

– डॉ0 दिनेश श्रीवास*

सेमेस्टर – II प्रश्नपत्र– IV (हिन्दी भाषा)
इकाई – 02 हिन्दी का भौगोलिक विस्तार
हिन्दी की उप भाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।

उत्तर प्रदेश से जुड़े होने के कारण उत्तर प्रदेश की राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक स्थितियों का प्रभाव बिहार पर पड़ते रहता है, लेकिन बिहार की उपभाषाएँ समानता और भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से बंग्ला से भी समानता रखती हैं। बिहारी का क्षेत्र पूर्वी हिन्दी तथा बंग्ला के बीच में है। बिहारी की बोलियों में मैथिली, मगही तथा भोजपुरी का नाम लिया जाता है। बिहारी भाषा का नाम ग्रियर्सन ने दिया है। उत्पत्ति की दृष्टि से बिहारी का संबंध मागधी अपभ्रंश से है। बिहारी बोलियों को 03 अलग–अलग

*जन्म : 10/12/1977, बिलासपुर (छ.ग.), माता : श्रीमती आशा देवी, पिता : श्री गणेश श्रीवास, शिक्षा : बी.एस–सी. (गणित), एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल. (हिन्दी), पी–एच.डी. – "मोहन राकेश के नाटक और व्यक्ति स्वातंत्र्यः एक विश्लेषण" शीर्षक पर, रूचि : कविता, कहानी, नाटक तथा शोध–पत्र लेखन में विशेष रूचि, कई काव्य संग्रह व कहानी संग्रह प्रकाशनाधीन, कार्य : 1. कई राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र का प्रकाशन, 2. दस से अधिक राष्ट्रीय सेमीनारों में शोध पत्र की प्रस्तुति, 3. सह–संयोजक के रूप राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन, 4. पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन कोरबा मुख्यालय में अनेक बार "हिन्दी पखवाड़ा" में मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि, 5. जनगणना, मतदान आदि राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में राज्य स्तर के प्रशिक्षक के रूप में कार्य, अन्य : आपके माता–पिता कम शिक्षित होने के बावजूद आपके लिए जीवन–अनुशासन के श्रेष्ठ शिक्षक बने, सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शा. इंजी. विश्वेश्वरैया महाविद्यालय कोरबा, छ.ग., आवास : ए–71, रामाग्रीन सिटी, बिलासपुर (छ.ग.), मोबा. नं:– 7770899636, 7974698680, Email ID: dineshsriwash77@gmail.com

PRINCIPAL, GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA

लिपियों में प्रयुक्त किया जाता है। छपाई में देवनागरी अक्षर का प्रयोग होता है तथा लिखने में कैथी लिपि का प्रयोग होता है। मैथिली लिपि बंग्ला लिपि से बहुत अधिक मिलती–जुलती है। इस प्रकार बिहारी बोलियों के लिए देवनागरी → कैथी → मैथिली लिपि का प्रयोग होता है। मैथिली में प्राचीन साहित्य मिलता है, जबकि भोजपुरी में कबीर के कुछ पुराने पद मिलते हैं। मगही को कैथी लिपि में लिखा जाता है। अनेक विद्वान मैथिली लिपि को देवनागरी लिपि से भिन्न मानते हैं। इस आधार पर इन बोलियों की लिपि इस प्रकार तीन अलग–अलग हैं–

मैथिली → मैथिली लिपि, भोजपुरी → देवनागरी लिपि, मगही → कैथी लिपि।

गौण बिहारी बोलियों में अंगिका तथा वज्जिका का भी नाम लिया जाता है।

बिहारी बोलियों के उत्पत्ति– बिहारी बोलियों की उत्पत्ति मागधी अपभ्रंश से हुई–

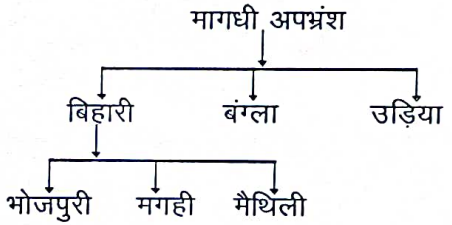

बिहारी बोलियों का भौगोलिक विस्तारः– बिहारी को बिहारी हिन्दी भी कहते हैं। यह बिहार में पूर्वी हिन्दी प्रदेश से बंग्ला प्रदेश के मध्य तक बोली जाती है। बिहार के अतिरिक्त यह उत्तर प्रदेश के गाजीपुर, बलिया, वाराणासी, मिर्जापुर, आजमगढ़, बस्ती, गोरखपुर आदि जिलों में बोली जाती है। बिहारी बोलियाँ हैं– मगही, मैथिली व भोजपुरी।

इन बोलियों में समानता की अपेक्षा विषमता अधिक है। इनमें जो तत्व है, वे भी प्रायः पूर्वी हिन्दी में पाए जाते हैं और जो भिन्न हैं वे बिहारी को एक अलग भाषा या सुगठित इकाई बनाने में बाधक हैं। कुछ वर्षों से भोजपुरी और अंगिका भाषा में साहित्यिक गतिविधियाँ बढ़ रही हैं।

बिहारी बोलियों का परिचय, भौगोलिक विस्तार एवं विशेषताएँः– बिहारी बोलियो में मुख्यतः भोजपुरी, मैथिली और मगही बोलियाँ हैं–

GOVT. E.V.P.G. COLLEGE ★ KORBA ★